वेद कथाङ्क (कल्याण-गीताप्रेस)

वैदिक धर्म-संस्कारों एवं संस्कृतिका समग्र जन-जीवनपर प्रत्यक्ष प्रभाव

(जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्रीश्यामनारायणाचार्यजी महाराज)

वेदमें एक लाख मन्त्र हैं। अस्सी हजार मन्त्र केवल कर्मकाण्डका निरूपण करते हैं, जबकि सोलह हजार मन्त्र ज्ञानका निरूपण करते हैं। मात्र चार हजार मन्त्र उपासना-काण्डके हैं।

मूलरूपसे वेदमें दो भाग हैं—पूर्वमीमांसा एवं उत्तरमीमांसा। पूर्वमीमांसा अर्थात् अस्सी हजार मन्त्र कर्मकाण्डका निरूपण करते हैं। कर्मकाण्ड-निरूपणके आदिमें लिखा हुआ है **'अथातो धर्मजिज्ञासा'** और यहींसे मानव-जीवनका संस्कार आरम्भ होता है। गर्भाधानसे लेकर मृत्युपर्यन्त सोलह प्रकारके संस्कारोंका निरूपण वेद करता है।

वास्तवमें वेदमें वर्णित संस्कार-विधिके अनुसार यदि माता-पिता अपने बच्चोंको सुसंस्कृत करें तो वह बालक सच्चा मानव बन सकता है। भगवान्‌ने मनुष्य-शरीर इसलिये प्रदान किया है कि तुम वेदानुकूल आचरण करो तभी तुम मानव बन सकोगे। वेद-विरुद्ध आचरण होनेपर मानवका मानव-धर्म निभाना असम्भव है, क्योंकि शास्त्रवचन

है—'**आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः।**' तात्पर्य यह कि आचारहीन व्यक्ति न पवित्र होते हैं और न पवित्र आचरण करते हैं। तथा '**यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भवेत्।**' बाल्यावस्थामें जो संस्कार प्राप्त होता है वह अमिट होता है। परंतु बालकोंको अच्छे संस्कार मिलने धीरे-धीरे गुरुकुल-आश्रमोंमें भी बंद हो रहे हैं; क्योंकि उनमें भी विलासी लोगोंके आवागमनसे आश्रमके वातावरणमें अन्तर पड़ता जा रहा है। धर्मका उपदेश करनेवाले गुरुजनोंमें भी भौतिकताकी आँधी चलनी शुरू हो गयी है। इसलिये पहलेकी अपेक्षा यद्यपि आज लाखों शिक्षा देनेवाले कथा सुना रहे हैं, योगकी शिक्षा दे रहे हैं, वेद-वेदान्तका अध्ययन करा रहे हैं, फिर भी आजकलका बालक संस्कारहीन होता जा रहा है।

पहले एक समय वह था जब कि लोग रुपये खर्च करके टी०बी० की बीमारीको डॉक्टरसे इलाज कराकर भगाते थे, परंतु आज घर-घर टी०वी० प्रवेश करके जन-जनके मन-वाणी तथा इन्द्रियोंपर अपना प्रभाव स्थापित करता चला जा रहा है। इसमें टी०वी० की निन्दा नहीं है, क्योंकि टी०वी० से तो संसारके सभी बातोंकी जानकारी होती है, परंतु '**अति सर्वत्र वर्जयेत्**'। समझदार व्यक्ति टी०वी० से समाचार सुन लेता है तथा धार्मिक सीरियल भी देख लेता है, परंतु छोटे बच्चोंकी बुद्धि अपरिपक्व होती है, वे अच्छी बातोंको कम ग्रहण कर पाते हैं और बुरी बातें बुद्धिमें शीघ्र जमा लेते हैं।

जहाँ टी०वी० के द्वारा प्रसारित श्रीराम-कृष्ण आदिके सीरियलसे कुछ लोगोंको अच्छी बातोंकी जानकारी मिली है, वहीं साठ प्रतिशत बच्चोंका संस्कार अश्लील चित्रादि देखनेसे बिगड़ा भी है। इसका मूल कारण है माता-पिताकी बच्चोंके प्रति लापरवाही तथा अधिक लाड़-प्यार करना। जिन माता-पिताको स्वयं संस्कार नहीं प्राप्त हुआ है, वे अपने बच्चोंको कहाँतक अच्छे संस्कार दे सकते हैं। ऐसे माता-पिता तो जन्म दे सकते हैं, परंतु अच्छे संस्कार तो सैकड़ों-हजारोंमें कोई एक सुसंस्कृत माता-पिता ही दे पाते हैं। वेद, शास्त्र, रामायण तथा गीतापर हजारों हिन्दी और अंग्रेजीमें टीकाएँ हो चुकी हैं तथा होती भी जा रही हैं, परंतु अच्छे संस्कार बहुत कम लोगोंको प्राप्त हो रहे हैं। इसका मूल कारण है—उपदेश देनेवाले संत-विद्वानों तथा माता-पिताका स्वयं अच्छे आचरणके बिना उपदेश देना। यदि ऐसा ही चलता रहा तो धीरे-धीरे आजका बालक बिगड़नेके अलावा सुधर नहीं सकता। जहाँ पूर्वकालमें विदेशी लोग जिस ज्ञान तथा भक्तिकी भूमि भारतसे शिक्षा प्राप्त करके आगे बढ़े थे, वहीं आज भारतके मानव-समाजका पतन हो रहा है, भारतका अनुकरण करनेवाले विदेशी भारतके आचरणको ग्रहण करके हमसे आगे बढ़ते जा रहे हैं।

हमें स्वयं अपने शास्त्र-वेद-पुराणोंमें विश्वास नहीं है; क्योंकि हम सभीका संस्कार नष्ट होता जा रहा है। आज 'गीताप्रेस'-जैसे संस्थानसे जिस प्रकार अच्छी-अच्छी पुस्तकोंका प्रकाशन, रामायण-गीताकी परीक्षा, अच्छी-अच्छी कथानक-पुस्तकोंका प्रकाशन तथा रामनाम-जप-संकीर्तन आदिसे लाखों लोगोंका मन परिवर्तित हुआ है, यदि इसी प्रकार स्वयंसेवी संस्थाओं एवं संत महापुरुषोंके आश्रमोंमें भी अच्छे आचरण करनेवाले विद्वानों एवं संतोंके द्वारा संस्कार देनेके साथ-साथ वेदानुकूल आचरण कराये जायँ तो मानवका विकास होना सम्भव है। धन-दौलत-कुटुम्ब और परिवार बढ़ानेसे मानवकी उन्नति नहीं होगी। रावणके पास तो सोनेकी लंका थी, परंतु संस्कारहीन होनेसे लंकाका एवं उसके सारे कुटुम्ब-परिवारका नाश हो गया। उसी परिवारमें विभीषणको अच्छा संस्कार संत-महात्माओंके द्वारा मिला, जिसके कारण स्वयं परमात्मा श्रीराम उसके पास मिलने आये और जब परमात्मा मिल गये तो सारे संसारका वैभव भी मिल गया।

'शं मे अस्त्वभयं मे अस्तु'॥

'मुझे कल्याणकी प्राप्ति हो और मुझे कभी किसी प्रकारका भय न हो।' (अथर्ववेद १९। ९। १३)